

हमारे राष्ट्र गीत की कहानी

हमारा राष्ट्रीय गीत है, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी द्वारा लिखित “वंदे मातरम” जिसने सालों तक भारत की आज़ादी की लड़ाई में कूदने वाले लाखों क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। पूरे विश्व में इस गीत को बहुत सम्मानजनक स्तर प्राप्त है और उसका कारण है कि इस गीत की लय और शब्द अनायास ही किसी के भी मन में देश प्रेम की लहर पैदा कर सकते हैं! आइए जानते हैं, श्रद्धेय भाई राजीव दीक्षित जी के शब्दों में इस गीत के पीछे छुपी प्रेरणादायी कथा। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक : https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4WVU0cVhmVIBhRDg/edit?usp=sharing



सन 1875 में, श्री बंकिमचंद्र चटर्जी ने वंदे मातरम गीत को लिखा। इस गीत के बाद उन्होंने देशभक्ति के ऊपर एक उपन्यास लिखा जिसका नाम था 'आनंद मठ'। सन 1882 में उन्होंने 'वंदे मातरम' गीत को 'आनंद मठ' का हिस्सा बनाया। बंकिमचंद्र जी की एक बेटी थी जो यह मानती थी कि इस गीत के शब्द अत्यंत क्लिष्ट हैं अर्थात् बहुत मुश्किल हैं समझने में परंतु बंकिमचंद्र जी कहते थे कि इस गीत के शब्द कितने ही जटिल क्यों न हों, एक दिन हर देशभक्त के मुँह पर ये गीत होगा! इस उपन्यास को लिखने के कुछ वर्ष उपरांत ही बंकिमचंद्र जी का निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद उनकी बेटी और रिश्तेदारों ने मिलकर इस उपन्यास का प्रचार किया। इस प्रचार के फलस्वरूप यह गीत बंगाल के बच्चे बच्चे की जुबान पर चढ़ गया! इस उपन्यास में ऐसी कई बातें थीं जो लोगों को सोचने पर विवश कर देती थीं और उन्हें आज़ाद होने की प्रेरणा देती थी। इस चलन को देखते हुए अंग्रेज़ी सरकार घबरा गई और उसने इस उपन्यास में फेरबदल करने से लेकर नष्ट करने की भरपूर चेष्टा की, परंतु फिर भी इसकी मूल प्रति किसी प्रकार सुरक्षित ही रही।

सन 1905 में अंग्रेजी सरकार ने बंगाल का विभाजन संप्रदाय के आधार पर कर दिया। पूरे देश में रोष की एक लहर दौड़ गई। लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी) के नेतृत्व में एक आन्दोलन चलाया गया जिसने इस विभाजन का बहिष्कार करना शुरू किया। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं जैसे गुड़ (चीनी उस समय इंग्लैंड से आती थी), खादी, हजामत के लिए उस्तरा आदि का उपयोग करने के लिए लोगों से अपील की। फलस्वरूप पूरे देश भर में इतने बड़े पैमाने पर बहिष्कार हुआ कि East India Company ने ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाला कि वे बंगाल विभाजन का कानून वापस लें। इसी दबाव के चलते अंग्रेजी सरकार 1911 में झुक गई और बंगाल का विभाजन टल गया। इस आन्दोलन की खास बात यह थी कि जब भी आन्दोलन से जुड़ी किसी सभा का आयोजन होता था, चाहे वह बड़े पैमाने पर हो या छोटे पैमाने पर, वंदे मातरम का गान सभा के शुरू और अंत में गाना अनिवार्य था! इससे सभा में आए हुए लोगों को प्रेरणा मिलती थी और एक दूसरे से जुड़े रहने की भावना को बल मिलता था। इतनी शक्ति थी इस राष्ट्र गीत में कि क्षुदी राम बोस (जो शहीदों में सबसे कम उम्र के थे), इस गाने को गाते गाते फांसी के फंदे पर झूल गए! जैसे आज के ज़माने में 'बबली बदमाश है', 'शीला की जवानी', 'मुन्नी बदनाम' गाने का फैशन है, उसी तरह उस समय युवाओं में 'वंदे मातरम' गाने का जूनून सवार था!

'वंदे मातरम' का आतंक इतना बुरा था अंग्रेजी सरकार के मन में कि उन्होंने अपनी राजधानी कलकत्ता से शिफ्ट करके दिल्ली कर दी, सन 1911 में क्योंकि देश में चल रहे बड़े आंदोलनों का केन्द्र उस समय बंगाल था! इस आन्दोलन को शांत करने के लिए East India Company ने इंग्लैंड के तत्कालीन राजा जॉर्ज पंचम को भारत आने का न्यौता दिया। उनकी शान में कंपनी ने श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर जी से एक गीत लिखवाया जिसमें केवल जॉर्ज पंचम की ही तारीफ थी और उस गीत का नाम था - "जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।" अगर आप हिन्दी अथवा संस्कृत की अच्छी समझ रखते हैं तो आपको समझने में देर नहीं लगनी चाहिए कि यह गीत किस तरह किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा कर रहा है! East India Company का मानना था कि यह गाना वंदे मातरम के सामानांतर है और इस तरह यह गाना 'वंदे मातरम' की लोकप्रियता कम करने में सहायता करेगा। रवीन्द्र नाथ टैगोर जी का परिवार East India Company के बहुत निकट था। उनके सगे बड़े भाई, अवनींद्र नाथ टैगोर, East India Company के कलकत्ता Division में Regional

Director थे। इसके अलावा उनके कई और परिवार के सदस्य थे जो East India Company में बड़े पदों पर नौकरी करते थे। 1919 से पहले रविन्द्र नाथ टैगोर अंग्रेज़ी सरकार के समर्थन में लिखा करते थे।

रविन्द्र नाथ टैगोर जी ने अपने बहनोई सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को एक खत लिखा था जिसकी प्रति आज भी आपको मिल सकती है। उसमें उन्होंने कहा था कि “जन गण मन” उन पर दबाव डाल कर लिखवाया गया था, जॉर्ज पंचम के लिए, वंदे मातरम के सामानांतर! उन्होंने खत में लिखा कि यह गाना भारत के लोगों के साथ एक धोखा है और इसे किसी सूरत में नहीं अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि वे इस खत के बारे में किसी को न बताएँ परंतु उनके मरणोपरांत इसकी सच्चाई हर भारतीय को पता होनी चाहिए! उनकी मृत्यु के बाद इस पत्र की प्रतियाँ सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध हो गईं। जब जॉर्ज पंचम भारत में था, तब तो इसको इस गाने का मतलब समझ में नहीं आया लेकिन ब्रिटेन जाकर उसने जब इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद करवाया तो उसने टिप्पणी की कि, “इतनी शानदार प्रशंसा तो मेरी कभी इंग्लैंड में भी नहीं हुई!” वह इतना खुश हुआ कि उसने रविन्द्र नाथ जी को इंग्लैंड बुलाकर उनका सम्मान किया। वह उस समय Nobel Prize Committee का अध्यक्ष भी था और उसने रविन्द्र नाथ जी का नाम “जन गण मन” के लिए Nobel Prize Committee के लिए दिया। चूँकि यह गाना रविन्द्र नाथ जी को मजबूरी में लिखना पड़ा था, उन्होंने विनती की कि उनको यह पुरस्कार इस गीत के लिए नहीं दिया जाए बल्कि उनकी पुस्तक ‘गीतांजलि’ के लिए दिया जाए।

रविन्द्र नाथ टैगोर जी अंग्रेज़ों के बारे में हमेशा हितकारी ही लिखते थे और वो भी हमेशा अंग्रेज़ी में। 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद जब रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने अंग्रेज़ों के हित में लिखना नहीं छोड़ा तो महात्मा गाँधी ने एक खत लिखकर उन्हें फटकार लगायी! वे खुद भी कलकत्ता गए और रविन्द्रनाथ टैगोर जी से भेंट की और कहा कि इतने जुल्म के बाद भी आप विदेशी चाटुकारिता को कब त्यागेंगे? इस भेंट का प्रभाव रविन्द्र नाथ जी पर पड़ा और उन्होंने अपने लेखों में कोमल विरोध जताना शुरू किया। उन्होंने अपनी सारी पदवियां अंग्रेज़ों को वापिस कर दी और लोगों से अपील की कि वे “जन गण मन” को प्रचारित न करें!

जब तक लाल-बाल-पाल कांग्रेस में थे तब तक वंदे मातरम गाया जाता रहा। कांग्रेसी नेता मोती लाल नेहरू से मतभेद के बाद बाल गंगाधर तिलक जी कांग्रेस पार्टी से अलग हो गए और उन्होंने अपना एक अलग दल बनाया जिसका नाम था 'गरम दल'। वहीं नरम दल, जिनका नेता था मोती लाल नेहरू, अंग्रेजों के विशिष्ट कोटि के चाटुकार थे। वे हमेशा अंग्रेजों के दायें बाएं घूमते रहते थे और इसी कोशिश में थे कि अंग्रेजों के साथ मिलकर भारत में गठबंधन (Coalition) सरकार बने। गरम दल वालों का मानना था कि ऐसी सरकार से तो गुलामी कई गुणा अच्छी है। नरम दल वाले वंदे मातरम के पूर्णतः विरुद्ध थे क्योंकि उनके अनुसार वह गीत भारतीयों के मन में देशभक्ति की भावना को भरता था। नरम दल वाले "जन गण मन" के कट्टर समर्थक थे क्योंकि इससे वे अपनी स्वामिभक्ति का प्रदर्शन कर पाते थे और उसके लिए उन्हें प्रेरणा मिलती थी। बाहर आम जनता में स्थिति कुछ और थी, लोग वंदे मातरम के दीवाने थे। कई सभाओं में तो यह स्थिति हो गई कि जहाँ वंदे मातरम गाया जाता था, उसी के साथ साथ नरम दल वाले जन गण मन की रट लगा लेते थे, गरम दल वालों को छेड़ने के लिए!

जब नरम दल वालों ने देखा कि वंदे मातरम की लोकप्रियता को कम करना तो नामुमकिन सा लग रहा है तो उन्होंने अंग्रेजों वाला पैंतरा अपनाया - Divide and Rule! उन्होंने मुस्लिम लीग (जिसकी स्थापना 1906 में हुई) साथ मिलकर एक ऐसा दुष्प्रचार किया जो आज भी मौजूद है। उन्होंने ये कहना शुरू कर दिया कि वंदे मातरम मुसलमानों को नहीं गाना चाहिए क्योंकि इसमें बुत परस्ती है। वे जानते थे कि वंदे मातरम संस्कृत में है जिसे अधिकांश भारत नहीं समझता, फिर जो कहते थे कि उन्हें संस्कृत आती है, वंदे मातरम के अंश लेकर उसका तोड़ मोड़कर अर्थ प्रस्तुत करने लगे। उन्होंने इस बहस की शकल ऐसी बना दी कि जैसे वंदे मातरम देशभक्ति का गीत न होकर कोई धार्मिक गान हो। इसका मतलब जिन मुसलमान भाइयों ने इस गाने को गाते हुए अपने फ़र्ज के रास्ते में देश के लिए जान कुर्बान कर दी, वे सब मुसलमान नहीं थे, क्या वे काफ़िर थे? संसद में 318 सांसद इस पक्ष में थे कि वंदे मातरम राष्ट्रीय गीत होना चाहिए, केवल एक को छोड़कर और उसका नाम था 'पंडित जवाहर लाल नेहरू'। उसका तर्क यह था कि जिस गाने को गाने से मुसलमान भाइयों की भावनाओं का अपमान होता है तो उसे हमें नहीं अपनाना! जो बातें मुसलमान भाइयों के मन में कभी नहीं आई, उसका बीज इन नेताओं ने बोया।

इस विवाद को लेकर सब गाँधी जी के पास गए और उन्होंने कहा कि वे खुद भी जन गण मन के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन फिर भी, उन्होंने किसी अन्य गीत की सहमति दे दी। इस बार नया गीत स्वयं गाँधी जी ने ही दिया जो था, “विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।” लेकिन यह भी नेहरू को नहीं जमा! उसका कहना था कि इस गाने को हम orchestra पर नहीं बजा सकते, वहीं जन गण मन को orchestra पर बजा सकते हैं क्योंकि उसको तैयार ही इसके लिए किया गया था, जॉर्ज पंचम के स्वागत के लिए। उसने इस बात को दबा दिया। गाँधी जी की मृत्यु के बाद उसने इस बात को फिर से पिटारे से बाहर निकाला और इसे राष्ट्र गान के रूप में स्थापित करा दिया। कहीं विद्रोह की स्थिति न हो जाए, इस डर से उसने वंदे मातरम को राष्ट्र गीत का नाम दे दिया लेकिन सभाओं में और प्रमुख सरकारी उत्सवों में राष्ट्र गान को गाना अनिवार्य करा दिया! तब से लेकर अब तक बचपन से ही बच्चों को इसकी सच्चाई कभी नहीं बताई गई। अगर वंदे मातरम का महत्व अर्थ सहित समझाया होता तो आज देश में देशभक्तों की तादाद थोड़ी और अधिक होती और वो भी बिना किसी सांप्रदायिक भावना के!

वंदे मातरम को संगीतबद्ध किया महान संगीतकार पंडित विष्णु दिगंबर पलुशकर जी ने। यह वो गीत है जिसने कभी हम सभी के आदर्श शहीद भगत सिंह, अशफाक उल्लाह खान, क्षुदी राम बोस, राम प्रसाद बिस्मिल, सुभाष चन्द्र बोस, चंद्रशेखर आज़ाद आदि कई क्रांतिकारियों को राष्ट्र हेतु मर मिटने के लिए प्रेरित किया। दुर्भाग्यवश जिन लोगों ने उनके खून की कीमत कभी समझी ही नहीं, वे अब हम पर शासन कर रहे हैं। अभी हाल ही में सारे देश ने देखा कि कैसे एक सांसद वंदे मातरम पर संसद से उठकर बाहर चला गया। ये सब निशानियाँ हैं गुलामी की! अब हम सभी को करना यह है कि हम सब भेदभाव मिटाते हुए, इस गीत को एक हृदय के साथ अपनाएं और अपने देश को उसके पैरों पर फिर से खड़ा करें!

वंदे मातरम!